बस्ती का सच

❑ कमलेश चन्द्र जोशी

गरीब बस्तियों का यथार्थ कुछ ऐसा जटिल है कि वह हमारी सामान्यीकृत धारणाओं को चुनौती देता प्रतीत होता है । मसलन, बच्चों, विशेषकर बालिकाओं के स्कूल से अनुपस्थित रहने का प्रश्न है । इसे बच्चों के मां-बाप की स्थिति से विच्छिन्न रूप में नहीं देखा जा सकता । इसी तरह बच्चों के काम करने का मामला है । इस अनुभव में कुछ ऐसी समस्यामूलक स्थितियों को रखा गया है । साथ ही, एक प्रसंग नैतिकता को लेकर भी प्रश्न उठाता है ।

कुछ दिन पहले की बात है । मैं शशि दीदी (शशि गुप्ता) के साथ कोयला प्लाट गया हुआ था । कोयला प्लाट, गौतमपुरी बस्ती का एक हिस्सा है । कोयला प्लाट से सटी हुई यमुना नदी बहती है। बारिश के दिनों में यहां बाढ़ का खतरा हमेशा बना रहता है । ज्यादा बारिश हुई नहीं कि पानी कोयला प्लाट में आ जाता है, बनी हुई झुग्गीयां डूब जाती हैं । लोग ऊपर आ जाते हैं । सरकारी टेंट लग जाते हैं । लोग कुछ दिन ऊपर ही रहते हैं । ज्यों पानी कम हुआ, फिर नीचे आ जाते हैं । नयी झुग्गियों का निर्माण शुरू हो जाता है । इसी तरह से हर साल नयी झुग्गियां बनती हैं, फिर उजड़ती हैं ।

यहां मजदूर वर्ग के लोग रहते हैं जिसमें अधिकतर बिहार, मध्यप्रदेश से आये लोग हैं । इस का नाम कोयला प्लाट इसलिए पड़ा क्योंकि गौतमपुरी बस्ती के पास डेसू का पावर हाउस है । यहां के अधिकतर लोग पावर हाउस में कोयला गाड़ी से कोयला उतारने का काम करते हैं । इस वर्ष यहां काफी नयी झुग्गियां बनी हैं । जिससे पूरा कोयला प्लाट घिर गया है। इन नयी झुग्गियों में अधिकतर आटो रिक्शा चलाने वाले लोग रहते हैं ।

इस कोयला प्लाट से हमारे सेंटर पर कई बच्चे पढ़ने व युवतियां सिलाई सीखने आती हैं। उस दिन कोयला प्लाट में घूमते हुए मेरी नजर देवकुमारी पर पड़ी । वह मुझे देखते ही सकुचा गयी और शायद समझ गयी कि भैय्या, मुझसे पूछने आये हैं कि मैं आजकल सेंटर पर क्यों नहीं आ रही ? उसने मुझे और शशि दीदी को देखते ही नमस्ते की और बिना पूछे ही बताना शुरू किया, ''भैय्याजी, मैं तो पढ़ने आना चाहती हूं । लेकिन अब सरोज (उसकी बड़ी बहन) सेन्टर में सिलाई सीखने जाती है, तो मुझे घर पर रहना पड़ता है। छोटी बहन को संभालना पड़ता है । मां काम पर चली जाती है ।'' देवकुमारी ने बिना पूछे ही अपनी सफाई पेश कर दी।

आइये, थोड़ा देवकुमारी के बारे में जान लें - देवकुमारी की उम्र करीब 9 वर्ष होगी । उसने पिछले साल नवम्बर में मेरे पास खुले केन्द्र में आना शुरू किया । यहां आते हुए उसने बहुत सुन्दर-सुन्दर चित्र बनाये । रंग-बिरंगी किताबों में रूचि लेना शुरू किया। उसके सुन्दर चित्रों और किताबों के प्रति रूचि को देखकर मुझे लगता कि अगर वह पढ़ना-लिखना सीख ले तो कितना अच्छा हो क्योंकि वह प्रतिदिन केन्द्र से एक किताब ले जाती थी और मुझसे कहती, ''भैय्याजी, मुझे कोई अच्छी किताब दे दो, पढ़ूंगी।'' तब उसकी सहेली उमा उससे कहती, 'मोटे अक्षरों वाली किताब ले लो। हम उसे पढ़ लेंगे ।' इस तरह से वह मोटे अक्षरों व रंगीन चित्रों वाली किताब ले जाती । कभी-कभी मेरे सामने अटक-अटक कर पढ़ने की कोशिश भी करती । फिर मुझे यह भी बताती कि मेरे घर के पास एक गांव के भैय्या रहते हैं । शाम को वे रंगीन किताब पढ़वाते हैं । वहां भी मैं जाती हूं। उसकी इन बातों से मुझे लगा कि उसमें पढ़ने-लिखने की इतनी ललक है तो मैं क्यों न उसे पढ़ना लिखना सिखाऊं ? इस तरह से मैंने उसे कहानी की किताब के माध्यम से कुछ-कुछ लिखवाने और शब्दों के पहचानने की प्रक्रिया शुरू करवाई । वह भी पढ़ने-लिखने में रूचि लेने लगी । मुझे लगा कि वह जल्दी ही पढ़ना-लिखना सीख जायेगी । मैं भी खुश हो रहा था कि देवकुमारी सीखने में रूचि ले रही है । इसे आप पढ़ाने का सुख भी कह सकते हैं । लेकिन आगे क्या हुआ ?

होली पर वह अपने माता-पिता के साथ गांव गई । वह झांसी जिले की रहने वाली है । इसके बाद वह गांव में ही रह गयी क्योंकि गर्मियों में गांव में बहुत काम होता है, फसलें कटती हैं, शादी ब्याह होते हैं । इसके बाद वह अगस्त में लौटी । लौटने के अगले दिन वह सेंटर में हम सबसे मिलने आ गयी । इसके बाद कहने लगी, भैय्याजी मैं कल से पढ़ने आऊंगी । फिर वह दो-तीन दिन सेंटर में आयी, उसके बाद बीमार पड़ गयी, उसके चेहरे पर दाने निकल आये । इसके बाद उसकी बहन ने सेंटर में सिलाई सीखना शुरू कर दिया। उसकी मां को लगता है अगर उसकी बड़ी बेटी सिलाई सीख ले तो ज्यादा अच्छा रहेगा । क्योंकि वे शायद उसकी

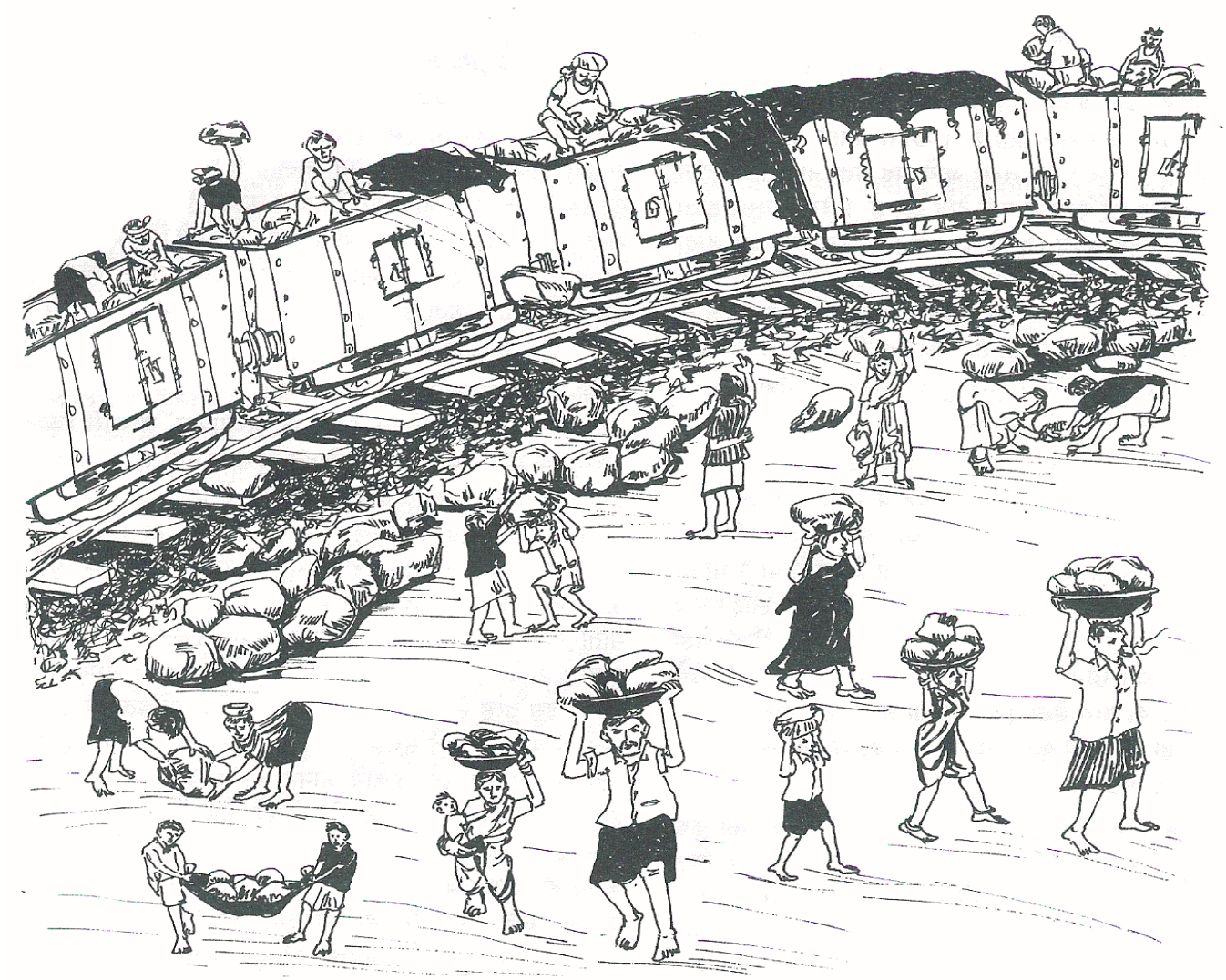

शादी करने वाली हैं। इस तरह से देवकुमारी अब घर पर रहती है। घर का सारा काम करती है, अपने भाई की देखभाल करती है। लेकिन मेरे लिए एक सवाल है कि देवकुमारी क्या भविष्य में पढ़ना-लिखना सीख पायेगी ? उसके वे रंग बिरंगे चित्र कहां खो जायेंगे? इसमें देवकुमारी या उसके माता-पिता का कहां दोष है ?

इसी तरह एक उदाहरण और देखें, शशि (शशि चौहान) की कक्षा में कविता नाम की लड़की आती है। उसकी उम्र 7 वर्ष के करीब होगी । एक दिन शशि मुझे बताने लगी कि आजकल कविता सेंटर पर नहीं आ रही है, क्योंकि उसकी मां गर्भवती है । उनका यही समय है । इसलिए कविता घर का काम करती है । मां की सहायता करती है तथा अपने छोटे भाई की देखभाल करती है। अब हमें यह सोचकर आश्चर्य हो सकता है कि एक 7 वर्ष की बच्ची अपनी मां के घर के कामों में कितनी मदद कर पाती होगी ? लेकिन यह सच है । कविता अपने घर पर रहती है, फिलाहाल सेंटर पर नहीं आ रही है। अब कब आयेगी ? ये हमें पता नहीं ? यहां कविता के बारे में भी थोड़ा जान लें - कविता शांत स्वभाव की गंभीर लड़की है । बहुत ही कम बोलने वाली । शशि की क्लास में उसे चुपचाप अपना काम करते हुए देखा जा सकता था । बहुत सुन्दर चित्र बनाना, चटक रंग का इस्तेमाल करना । प्रश्नों का बहुत सोच-समझकर उत्तर देना । यह सभी छोटी-छोटी चीजें उसके एक गंभीर व्यक्तित्व को उजागर करती हैं। सीखने में उसकी अच्छी गति बनी थी । फिलहाल यह गति स्थिर है ।

इन्द्रजीत हमारे केन्द्र के पास ही रहता है । उसकी उम्र करीब 5 वर्ष की होगी । हमारे केन्द्र में आता है । आज से करीब 15-

20 दिन पहले उसके भाई का जन्म हुआ है । इसके पिता की दरियागंज में फुटपाथ पर एक छोटी सी दुकान है । वे सुबह दुकान पर चले जाते हैं, और शाम 7-8 बजे लौटते हैं । दुकान से आने के बाद उन्हें खाना बनाना पड़ता है । खाना बनाने के लिए पानी चाहिये । बस्ती में कब पानी चला जाये यह पता नहीं । दो-तीन दिन से मैं इन्द्रजीत को केन्द्र में नहीं देख रहा हूं । वैसे अक्सर होता क्या है कि वह सुबह सुबह (हमारे पहुंचते ही) सेन्टर पर आ जाता है। झाड़ू से सेन्टर की सफाई करता है, चटाई बिछाता है । इन छोटी-छोटी चीजों को वह अपना कर्तव्य मानता है या यह कह लें कि ये सब चीजें उसने यहां सीखी हैं । कागज की छोटी-छोटी चिटों पर छोटे-छोटे चित्र बनाता है । कुछ-कुछ सीखने की प्रक्रिया में है। रंग-बिरंगी किताबों में गहरी दिलचस्पी है ।

एक दिन इन्द्रजीत को एक छोटे से डिब्बे से अपने घर की बाल्टियों में पानी भरते हुए देखता हूं । यह काम भी वह तब करता है जब नल खाली हो । वैसे नल पर चार-पांच लोगों की भीड़ हमेशा रहती है । उसका बार-बार एक छोटे से डिब्बे में पानी भरकर बाल्टियों में डालना मुझे विचलित कर देता है । मुझे यह लाइन याद आती है कि ''बच्चे से उसका बचपन मत छीनिए'' । लेकिन यहां उसका बचपन कौन छीन रहा है ? इसी तरह मैं एक दिन और उसे अपने छोटे भाई के साथ बैठा हुआ देखता हूं । वह अपने सोते हुए भाई पर लग रही मक्खियों को भगा रहा है । उसकी मां घर के किसी अन्य काम में लगी है ।

हमारे केन्द्र के बगीचा समूह में करीब 10-11 वर्ष की कुछ लड़कियां आती हैं । वे केन्द्र की विभिन्न गतिविधियों में शामिल होती हैं । शाहिदा और सावित्री इसी समूह की दो सदस्याएं हैं । वे अक्सर लेट आती या अनुपस्थित रहती हैं । तीन-चार बार मैंने उन्हें कोयला गाड़ी (माल गाड़ी) से कोयला उतारते हुए देखा है । कोयला गाड़ी के बारे में भी थोड़ा जान लें । जैसा कि मैंने इसमें जिक्र किया कि गौतमपुरी से सटा हुआ डेसू का पावर हाउस है । इस पावर हाउस के लिए कोयला मालगाड़ी से आता है । मालगाड़ी की पटरियां बस्ती से लगी हुई हैं । जब कोयला पावर हाउस जाता है तो मालगाड़ी कभी कभी वहीं रूक जाती है । लोग कोयला उतारने दौड़ पड़ते हैं । वहां बच्चे से लेकर बूढ़े, पूरे के पूरे परिवार कोयला उतारते हैं, फिर बेचते हैं । यह कोयला बस्ती की आमदनी का जरिया है ।

जिस दिन बस्ती में कोयला गाड़ी रूकी हो, उस दिन सावित्री और लक्ष्मी को फुर्ती से कोयला उतारते हुए देखा जा सकता है । अब आप यहां पर क्या करेंगे ? क्या हम उन्हें नैतिकता का पाठ पढ़ायें ? कोयला उतारना बुरी बात है ? चोरी करना पाप है ? या और कुछ ....

हर महीने केन्द्र में होने वाली बस्ती मीटिंग में बच्चे व युवतियों की मातायें जुड़ती हैं । समय हम 11 बजे का रखें, तो लोग 11.30 -12.00 बजे ही आते हैं । हम उनसे हर बार कहते हैं कि महीने में एक दिन तो हम आपको बुलाते हैं। आप सेंटर पर समय पर आ जाया करो। तो हमें पता चलता है कि आज मिट्टी का तेल बंट रहा है, तो नहीं आ पायेंगे या कोई कहता है कि नहाकर आयेंगे, पानी भर कर आयेंगे । फिर पानी चला जाता है। सभी काम अधूरे रह जाते हैं । कोई दवाई लाने गया है । इस तरह से छोटी-छोटी समस्यायें आती रहती हैं । अब इन समस्याओं का क्या उपाय है ?

अंत में उपरोक्त सभी समस्याओं को थोड़ा व्यापक रूप में समझें । जिन समस्याओं को मैं गंभीरता से महसूस कर रहा हूँ, क्या उन समस्याओं को पब्लिक स्कूल के अध्यापक, सरकारी स्कूल के अध्यापक या अन्य लोग इसी शिद्दत के साथ महसूस कर पाते होंगे? इसका भी एक उदाहरण देखें - एक बार में बस्ती के स्कूल में गया तो वहां के अध्यापकों से स्कूल के बारे में बात की । वे कहने लगे कि बच्चे तो स्कूल आते नहीं । स्कूल आयेंगे तो किताब, पैंसिल, कापी में से कुछ न कुछ गायब होगा । आधी छुट्टी में भाग जाते हैं। माता-पिता तो मस्त रहते है उन्हें अपने बच्चों की परवाह नहीं होती । उनके कपड़े तक साफ नही होते । कक्षा में समय पर नहीं आते। इस तरह से कई तरह की चीजें उन्होंने हमें बता दी । लेकिन उनसे मैं यह सब बातें समझना चाहता हूं कि आज बच्चा स्कूल क्यों नहीं आया? इसे क्या उन्होंने जानने की कोशिश की ? हो सकता हो बच्चा बीमार हो या उसकी मां को कहीं दवाई या राशन लाने जाना हो । तब बच्चे को घर की या अपने छोटे भाई की देखभाल करनी हो । नहा कर क्यों नहीं आया ? क्या लोगों की लाइन लगे नल में उसको नहाने का समय मिला होगा ? हो सकता है नल में पानी ही न आ रहा हो। बच्चों को धुले कपड़े पहनाने या बच्चों को संवारने का समय क्या उनके माता-पिता को मिलता होगा ? क्या इन सभी बातों को हमने कभी समझने की कोशिश की है ? यहां पर मैं अध्यापकों को भी दोषी नहीं मान रहा । तो फिर एक सवाल उठता है कि शायद हमारी सामाजिक व आर्थिक व्यवस्था ही दोषी है ? अब थोड़ा सरकार का नजरिया भी जान लें। सरकार की प्राथमिक शिक्षा के संबंध में तमाम योजनायें बनती हैं, घोषणायें होती हैं । लाखों के बजट बनाये जाते हैं। नि:शुल्क शिक्षा के वादे किये जाते हैं। दोपहर का खाना बंटता है । लेकिन फिर भी हालत में बहुत ज्यादा तब्दीली नहीं हैं। देवकुमारी और कविता जैसी लाखों लड़कियां कैसे स्कूल जा सकती हैं ? इस पर हम चुप हैं । आखिर में यही कहना है कि यह बस्ती का सच तो है ही । शायद यह सच पूरे देश पर लागू होता हो । ◆